एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 07 (जुलाई, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

गोबर का उपयोग करके ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना: महिला सशक्तिकरण

*डॉ. अभिषेक कुमार
पशु चिकित्साधिकारी, करतल (बांदा), पशु पालन विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: vmoabhi@gmail.com

प्रस्तावना और पृष्ठभूमि

भूमिका: भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि और पशुपालन है। ग्रामीण क्षेत्रों में गाय और भैंस को धन का प्रतीक माना जाता है। पारंपरिक रूप से, गाय के गोबर का उपयोग केवल उपले (कंडे) बनाने या खेतों में साधारण खाद के रूप में किया जाता रहा है। लेकिन आज के आधुनिक युग में, जिसे कभी 'कचरा' या 'अपशिष्ट' समझा जाता था, वह **"ब्लैक गोल्ड" (काला सोना)** बनकर उभर रहा है।

ग्रामीण महिलाओं की वर्तमान स्थिति: ग्रामीण भारत में महिलाएं कृषि और पशुपालन के कार्यों में सबसे अधिक श्रम देती हैं, लेकिन आर्थिक संसाधनों पर उनका नियंत्रण न के बराबर होता है। वे दिनभर मेहनत करती हैं, लेकिन उनके पास खुद की कोई स्वतंत्र आय नहीं होती। गोबर प्रबंधन एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें महिलाएं स्वाभाविक रूप से जुड़ी हुई हैं। यदि इस पारंपरिक कार्य को वैज्ञानिक और व्यावसायिक रूप दे दिया जाए, तो यह ग्रामीण महिलाओं के लिए आर्थिक स्वतंत्रता का सबसे बड़ा जरिया बन सकता है।

महिला सशक्तिकरण का नया आयाम: महिला सशक्तिकरण का वास्तविक अर्थ है - निर्णय लेने की क्षमता और आर्थिक स्वतंत्रता। जब एक ग्रामीण महिला गोबर से मूल्यवर्धित उत्पाद बनाकर खुद पैसे कमाने लगती है, तो समाज और परिवार में उसका दृष्टिकोण बदल जाता है। यह लेख इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे गोबर क्रांति ग्रामीण महिलाओं को 'निर्भर' से 'आत्मनिर्भर' बना रही है।

गोबर से बनने वाले व्यावसायिक उत्पाद

गोबर से केवल उपले ही नहीं बनते, बल्कि आज की अत्याधुनिक तकनीकों और नवाचार के माध्यम से इससे दर्जनों प्रकार के व्यावसायिक उत्पाद बनाए जा रहे हैं, जिनमें महिलाएं प्रमुख भूमिका निभा रही हैं:

वर्मीकम्पोस्ट (केंचुआ खाद) और जैविक खेती

- **प्रक्रिया:** गोबर को केंचुओं की मदद से उच्च गुणवत्ता वाली जैविक खाद में बदला जाता है।
- **आर्थिक लाभ:** रासायनिक खादों के दुष्प्रभावों के कारण बाजार में वर्मीकम्पोस्ट की मांग बहुत तेजी से बढ़ रही है। महिलाएं इसे ₹8 से ₹15 प्रति किलो तक बेचकर अच्छा मुनाफा कमा रही हैं।

पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद

- **दीपक और मूर्तियाँ:** दीपावली के समय गोबर से बने दीयों और गणेश-लक्ष्मी की मूर्तियों की भारी मांग होती है। ये उत्पाद 100% पर्यावरण के अनुकूल होते हैं और पानी में विसर्जित करने पर खाद बन जाते हैं।
- **वैदिक पेंट:** खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC) के सहयोग से अब गोबर से प्राकृतिक और बैक्टीरिया-रोधी वॉल पेंट बनाया जा रहा है, जो ग्रामीण महिलाओं के लिए रोजगार का नया साधन बना है।

अगरबत्ती और धूपबत्ती

- गोबर के पाउडर में जड़ी-बूटियाँ मिलाकर बनाई गई धूपबत्ती और अगरबत्ती न केवल सुगंध फैलाती हैं, बल्कि मच्छरों को भगाने और हवा को शुद्ध करने का भी काम करती हैं।

कागज और शिल्प कला

- गोबर के रेशों से हस्तनिर्मित कागज और डायरियाँ बनाई जा रही हैं, जो कॉर्पोरेट जगत में बहुत लोकप्रिय हो रही हैं।

आर्थिक मॉडल और स्वयं सहायता समूह

ग्रामीण क्षेत्रों में व्यक्तिगत रूप से व्यवसाय शुरू करना कठिन हो सकता है, इसलिए **स्वयं सहायता समूह (Self Help Groups - SHGs)** इस क्रांति के केंद्र बिंदु बन गए हैं।

'गोधन न्याय योजना' और सरकारी प्रयास

छत्तीसगढ़ जैसी राज्य सरकारों द्वारा शुरू की गई 'गोधन न्याय योजना' इसका एक बेहतरीन उदाहरण है, जहाँ सरकार ₹2 प्रति किलो की दर से गोबर खरीदती है। इस योजना के तहत महिला स्वयं सहायता समूहों को गोबर से वर्मीकंपोस्ट और अन्य उत्पाद बनाने का काम सौंपा गया है। इससे महिलाओं को सीधे उनके बैंक खातों में भुगतान मिलता है।

एक लघु उद्योग का आर्थिक ढांचा

यदि 10 महिलाओं का एक समूह मिलकर गोबर प्रसंस्करण इकाई शुरू करता है, तो उनका आर्थिक गणित कुछ इस प्रकार होता है:

उत्पाद का नाम	उत्पादन लागत (प्रति इकाई/किग्रा)	बाजार मूल्य	अनुमानित मासिक शुद्ध लाभ (समूह का)
वर्मीकम्पोस्ट	₹3 - ₹4	₹10 - ₹12	₹15,000 - ₹20,000
गोबर के दीये/मूर्तियाँ	₹0.50	₹3 - ₹5	₹25,000 (त्योहारों के सीजन में)
धूपबत्ती/अगरबत्ती	₹20 (प्रति पैकेट)	₹50 - ₹60	₹12,000 - ₹15,000

वित्तीय समावेशन

कमाई का पैसा सीधे महिलाओं के बैंक खातों में जाने से वे बैंकिंग प्रणाली से जुड़ती हैं। इससे उनमें बचत करने की आदत विकसित होती है और वे अपनी जरूरतों के लिए साहूकारों के चंगुल से मुक्त हो जाती हैं।

ग्रामीण महिलाओं और समाज पर प्रभाव

गोबर के इस व्यावसायिक उपयोग ने ग्रामीण भारत में एक मूक सामाजिक-आर्थिक क्रांति को जन्म दिया है। इसके प्रभाव बहुआयामी हैं:

सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि

जब एक महिला अपने परिवार की आय में योगदान देती है, तो परिवार के निर्णयों (जैसे बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, जमीन की खरीद) में उसकी राय को महत्व दिया जाता है। उसे समाज में 'गृहिणी' के बजाय एक 'उद्यमी' के रूप में देखा जाने लगता है।

बच्चों की बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य

अनुसंधानों से पता चला है कि जब महिलाएं कमाती हैं, तो वे अपनी आय का 90% हिस्सा अपने बच्चों की शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य पर खर्च करती हैं। गोबर से होने वाली आय ने ग्रामीण बच्चों को अच्छे स्कूलों में भेजने का मार्ग प्रशस्त किया है।

रिवर्स माइग्रेशन (पलायन पर रोक)

अक्सर ग्रामीण पुरुष काम की तलाश में शहरों की ओर पलायन करते हैं। लेकिन जब महिलाओं को घर पर ही गोबर के माध्यम से एक स्थिर आय का साधन मिल जाता है, तो परिवार की आर्थिक स्थिति सुधरती है और मजबूरी में होने वाला पलायन कम होता है।

"गोबर अब केवल कचरा नहीं है, यह ग्रामीण महिलाओं के हाथों का वो हुनर बन चुका है जो उनकी किस्मत की लकीरें बदल रहा है।"

चुनौतियाँ, समाधान और निष्कर्ष

हालाँकि यह मॉडल बेहद सफल है, लेकिन इसे जमीनी स्तर पर बड़े पैमाने पर लागू करने में कुछ चुनौतियाँ भी हैं।

प्रमुख चुनौतियाँ

1. **तकनीकी ज्ञान का अभाव:** ग्रामीण महिलाओं को गोबर से पेंट या उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद बनाने की सही ट्रेनिंग नहीं मिल पाती।
2. **बाजार लिंकेज:** उत्पाद तो बन जाते हैं, लेकिन उन्हें शहरों के बड़े बाजारों या ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म (जैसे अमेज़न, फ्लिपकार्ट) तक पहुँचाने में दिक्कत आती है।
3. **गुणवत्ता नियंत्रण:** हाथ से बने उत्पादों में एकरूपता की कमी होना।

समाधान के उपाय

- **कौशल विकास:** नाबार्ड (NABARD) और कृषि विज्ञान केंद्रों (KVK) के माध्यम से महिलाओं को मुफ्त व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

- **डिजिटल साक्षरता:** महिलाओं को स्मार्टफोन चलाने और ऑनलाइन उत्पाद बेचने की ट्रेनिंग दी जानी चाहिए।
- **ब्रांडिंग:** 'खादी' या 'लोकल फॉर वोकल' के तहत इन उत्पादों की ब्रांडिंग करके इन्हें प्रीमियम बाजारों में बेचा जा सकता है।

निष्कर्ष

गोबर से मूल्य संवर्धन के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना गांधीजी के **'ग्राम स्वराज'** के सपने को साकार करने जैसा है। यह न केवल महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, जैविक खेती और अपशिष्ट प्रबंधन की दिशा में भी एक क्रांतिकारी कदम है। जब देश की ग्रामीण महिला सशक्त होगी, तो देश की अर्थव्यवस्था बुनियादी स्तर से मजबूत होगी। गोबर से समृद्धि का यह सफर वास्तव में **"वेस्ट टू वेल्थ"** और महिला सशक्तिकरण का सबसे सुंदर उदाहरण है।